2

आदि में

फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें। तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:26, 27)।

अध्ययन शुरू करने का सबसे सही स्थान आरम्भ ही है, जो हमारे इस विषय के सम्बन्ध में उत्पत्ति की पुस्तक है। स्त्रियों के लिए परमेश्वर की योजना के हमारे विचार से सम्बन्धित दो मुख्य विचार उत्पत्ति 1:26, 27 में मिलते हैं। पहले तो, इब्रानी शब्द *adam* जिसका अनुवाद ''मनुष्य'' हुआ है, दोनों आयतों में ''मनुष्यजाति'' के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है। परमेश्वर ने कहा, ''हम मनुष्य [*adam*] को ... बनाएं''; फिर वचन में कहा गया है कि उसने ''नर और नारी करके उनकी सृष्टि की।'' यदि ''नर'' का अर्थ ''मनुष्य जाति'' के बजाय ''नर'' था, तो इब्रानी शब्द *ish* (''नर,'' ''पति'' और कई बार ''व्यक्ति'' का अर्थ देता है) इस्तेमाल किया जाना था। इब्रानी शब्दों में पाए जाने वाले इस अन्तर को जानने से हमें यह समझने में सहायता मिलती है कि मछलियों, पक्षियों, जन्तुओं और पृथ्वी पर रेंगने वालों पर प्रभुता केवल नर की ही नहीं होनी थी, बल्कि उत्पत्ति 1:28 में *adam* अर्थात लोगों को यह अधिकार दिया गया था, जिसमें ''स्त्री'' भी होनी थी। परमेश्वर ने पुरुषों को भी उतना ही अधिकार दिया। जितना स्त्रियों को। सब वस्तुओं पर अधिकार करने का काम और सौभाग्य पुरुषों और स्त्रियों दोनों को दिया गया था।

दूसरा, हम में से सब अर्थात ''नर'' और ''नारी'' जो परमेश्वर की सृष्टि हैं, उसके स्वरूप पर बनाए गए थे। इस तथ्य का कि परमेश्वर आत्मा (यूहन्ना 4:23, 24) अर्थात बिना भौतिक आकार के है, अर्थ है कि उसने हमें भौतिक स्वरूप पर नहीं बनाया। वर्तमान में हमारी देहें ''पृथ्वी के स्वरूप'' पर हैं, जिसका अर्थ यह है कि हमारी भौतिक देहें परमेश्वर के स्वरूप पर नहीं हैं। जी उठने पर, हमारी देहों को ''स्वर्गीय स्वरूप'' मिलेगा (1 कुरिन्थियों 15:49)। उस समय यह परमेश्वर और यीशु की आत्मिक देहों की तरह (1 यूहन्ना 3:2; फिलिप्पियों 3:21) ''आत्मिक देह'' (1 कुरिन्थियों 15:44) होगी। आत्मिक जीव, जैसे स्वर्गदूत (इब्रानियों 1:13, 14), वासनाओं रहित हैं (देखें मत्ती 22:30), जिसका अर्थ यह होगा कि परमेश्वर, जो आत्मिक जीव है, बिना वासना के है। यह बात सच है कि इस कारण पुरुष को भौतिक या आत्मिक रूप में स्त्री से बढ़कर परमेश्वर के समान नहीं माना जाना चाहिए।

परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप पर बनाया है अर्थात उसने हमें अपने आत्मिक स्वभाव वाले बनाया, जिसमें बुद्धि, भावनाएं और एहसास हैं। परमेश्वर की बनाई सब चीज़ों में से केवल मनुष्य जाति पर ही परमेश्वर के आत्मिक स्वरूप की छाप है। चाहे परमेश्वर ने स्त्रियों को पुरुषों वाली शारीरिक सामर्थ देकर नहीं बनाया, परन्तु उसने उन्हें अपना ही स्वरूप अर्थात अपनी आत्मिक बनावट, वही स्वरूप जो पुरुषों को दिया। पुरुष और स्त्रियां शारीरिक बनावट में एक-दूसरे से अलग थे, परन्तु उनका आत्मिक स्वभाव एक जैसा ही बनाया गया था। उन्हें परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया था। आत्मिक बनावट में न कोई किसी से कम है और न बड़ा।

साथी या सेवक?

क्या परमेश्वर ने स्त्रियों को पुरुषों के लिए सहायता करने वाले सेवक बनाया? उत्पत्ति 2:18, 20 में किंग जेम्स के अनुवाद "help meet" का अर्थ किसी ने यह निकाला है कि स्त्री को पुरुष की सहायता करने वाली बनाया गया था, जिसका एकमात्र उद्देश्य उसकी आवश्यकताओं को पूरा करना था। यह निष्कर्ष सही नहीं है।

अनुवादित शब्द *"meet,"* या ''मेल खाता'' के अर्थ वाला *neged* सम्भवतया ''से मिलता-जुलता'' (NASB में टिप्पणी में अनुवादित) या ''तुलना के योग्य'' (न्यू किंग जेम्स वर्ज़न) हो सकता है। यह हव्वा के विषय में आदम का निष्कर्ष हो सकता है, क्योंकि उसने कहा, ''अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है'' (उत्पत्ति 2:23)।

पशुओं में से कोई भी पशु आदम से तुलना के योग्य नही था यानी वे उसके लिए मेल खाते साथी नहीं थे। वे उसके साथ आत्मिक स्तर पर सांझ नहीं कर सकते थे, सामाजिक स्तर पर उसके साथ मिल नहीं सकते थे और न ही प्रजनन में उसकी सहायता कर सकते थे। उसे स्त्री की अर्थात एक ऐसी साथी की आवश्यकता थी, जो उसके शारीरिक, बौद्धिक और भावनात्मक स्वभाव और बनावट से मेल खाती हो। परमेश्वर ने आदम के लिए एक सम्पूर्ण साथी के रूप में स्त्री को बनाया ताकि आदमी और औरत एक-दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

बार-बार दोहराया जाने वाला विचार सही हो सकता है कि परमेश्वर ने स्त्री को आदम के पांवों से नहीं बनाया ताकि वह उसे रौंदने की कोशिश न करे या उसके सिर से नहीं बनाया ताकि वह उस पर हुकम चलाने की कोशिश न करे, बल्कि उसे उसकी पसली से बनाया ताकि वह उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली बन सके। उत्पत्ति की पुस्तक में ऐसा कोई सुझाव नहीं मिलता कि स्त्री को पुरुष से कम माना जाए या उस पर पुरुष द्वारा अधिकार चलाया जाए। परमेश्वर ने स्त्री को एक विशेष प्रकार के साथ के लिए पुरुष की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाया।

स्वाभाविक प्रबन्ध

पुरुष के पूरक के रूप में स्त्री की रचना में और जटिलताएं हैं। आदम के लिए साथी के रूप में एक और पुरुष को बनाने के बजाय परमेश्वर ने स्त्री को बनाया। पुरुष के लिए परमेश्वर का प्रबन्ध यह है कि वह ''अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे'' (उत्पत्ति 2:24)।

स्त्री को बनाने में परमेश्वर की मंशा उसे पुरुष की स्वाभाविक शारीरिक साथी बनाना था। उसे दूसरी स्त्रियों के लिए नहीं बनाया गया था। परमेश्वर ने उसे पुरुष के लिए बनाया ताकि वह किसी दूसरे पुरुष के बजाय अपनी शारीरिक साथी के रूप में उसे ले। पौलुस ने जोर दिया कि यह परमेश्वर का स्वाभाविक प्रबन्ध है। अन्यजातियों के पाप की अति के बारे में लिखते हुए जो परमेश्वर की योजना के विरुद्ध थी उसने कहा, ''यहां तक कि उनकी स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उससे जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला। वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया'' (रोमियों 1:26, 27)। मूसा के माध्यम से दी गई व्यवस्था में कहा गया था, ''यदि कोई जिस रीति स्त्री से उसी रीति पुरुष से प्रसंग करे, तो वे दोनों घिनौना काम करने वाले ठहरेंगे; इस कारण वे निश्चय मार डाले जाएं, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा'' (लैव्यव्यवस्था 20:13)। परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को एक दूसरे के साथी होने के लिए बनाया। उसने शारीरिक साथी होने के लिए पुरुषों को पुरुषों के लिए या स्त्रियों को स्त्रियों के लिए नहीं बनाया।

बनावट से कार्य का संकेत मिलता है

पुरुषों और स्त्रियों के सम्बन्ध के कार्य का संकेत उनकी शारीरिक बनावट से मिलता है। 1 कुरिन्थियों 6:13क से यह संकेत मिल सकता है कि कुरिन्थुस में मसीही लोगों ने गलत प्रासंगिकता बना ली थी। वह आसानी से समझ आने वाली सच्चाई ही बता रहा था, जब उसने लिखा कि, ''भोजन पेट के लिए और पेट भोजन के लिए है।'' हम उसके काम को देखकर पता लगा सकते हैं कि परमेश्वर ने उसे क्यों बनाया था, वैसे ही जैसे मानवीय शरीर के दूसरे अंगों के उचित इस्तेमाल से, और परमेश्वर की बनाई अन्य वस्तुओं के काम से जान सकते हैं।

यह देखकर कि पुरुष और स्त्रियां बेहतरीन कैसे करते हैं, हम जान सकते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें किस काम के लिए बनाया था। प्रकाशन दिया जाए तौ भी हमें यह निष्कर्ष निकालने के लिए इस की आवश्यकता नहीं है कि पुरुष नहीं, बल्कि स्त्रियां बच्चों को जन्म दें (1 तीमुथियुस 5:14)। पुरुषों व स्त्रियों की शारीरिक बनावट व स्वभाव से कई मामलों में उनकी भूमिका तय हो जाती है। परन्तु कई बार हमारी पूर्वधारणाओं के कारण हम स्त्रियों को पुरुषों के और पुरुषों को स्त्रियों के काम करने पर ज़ोर देते हैं, जो स्वाभाविक नहीं होते, जैसे खाना बनाना, घर की साफ-सफाई करना या बगीचे की देखभाल करना। हमें सावधान रहना चाहिए कि वे पाबन्दियां न लगाएं, जो उनकी स्वाभाविक शरीरिक रचना पर परमेश्वर

के प्रकाशन में उन पर नहीं लगी हैं।

इस बात का कि सामूहिक रूप से स्त्रियां पुरुषों से ताकतवर नहीं होती (1 पतरस 3:7) यह अर्थ नहीं है कि स्त्रियां वे शारीरिक कार्य नहीं कर सकतीं जो आमतौर पर पुरुषों के करने वाले माने जाते हैं। इसी प्रकार पुरुषों में कई ऐसे काम करने की दक्षता है, जिनमें शक्ति की नहीं बल्कि कुशलता की आवश्यकता होती है और आमतौर पर उन्हें स्त्रियों की ज़िम्मेदारी समझा जाता है।

पुरुषों की शारीरिक बनावट शायद इस बात का संकेत है कि परमेश्वर की इच्छा उन्हें अगुवे बनाने की थी। पुरुष स्त्रियों से बलवान होते हैं और उनकी आवाज़ भी रौबदार होती है। कुल मिलाकर वे स्त्रियों से तगड़े होते हैं हाल ही के तकनीकी विकास से इन बातों का महत्व कम हो गया है, परन्तु नर की विशेषताओं ने उसे अगुआई की भूमिका में ही रखा है।

मसीही पुरुषों और स्त्रियों को समाज द्वारा ठहराई भूमिका से अलग करने का अधिकार है। तौ भी केवल यह दिखाना अच्छा नहीं होगा कि मसीही लोगों को उन पारम्परिक भूमिकाओं को तोड़ने की छूट है। किसी मसीही पुरुष या स्त्री के हठी कामों से यदि मसीह के कार्य में रुकावट आती है तो यह परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन होगा। यदि मसीही स्वतन्त्रता के इस्तेमाल से लाभ होने के बजाय हानि होती है (1 कुरिन्थियों 9:19-23), और विशेषकर इससे किसी भाई को ठोकर लगती है तो इसे छोड़ देना चाहिए। पौलुस ने लिखा है, ''भला तो यह है, कि तू न मांस खाए और न दाख रस पीए, न और कुछ ऐसा करे, जिस से तेरा भाई ठोकर खाए'' (रोमियों 14:21)।

सारांश

स्त्रियों और पुरुषों के सम्बन्धों और ज़िम्मेदारियों की किसी भी बात में परमेश्वर के रचनात्मक उद्देश्यों पर विचार किया जाना आवश्यक है। इनमें से कुछ तो पुरुषों और स्त्रियों की प्रकृति तथा शारीरिक बनावट से ही पता चल सकते हैं। अन्यों का परमेश्वर के प्रकाशन का ध्यान से अध्ययन करके पता चल सकता है।